न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्तानी मुसलमानों
तुम्हारी दास्ताँ तक भी न होगी दास्तानों में

ज़ालिम बादशाह का अज़ाब

ख़ादिम
सूफ़ी अनवर रज़ा खान क़ादरी

www.ghausokhwajaorazatrust.com

नाम किताब : **ज़ालिम बादशाह का अज़ाब**

मुसन्निफ : सूफ़ी अनवर रज़ा खाँ क़ादरी (राँची, झारखण्ड)

कम्पोजिंग व डिजाईनिंग : सूफ़ी अनवर रज़ा खाँ क़ादरी

नज़रे सानी : टीम, गौसो ख़्वाजा व रज़ा ट्रस्ट

बएहतमाम : गौसो ख़्वाजा व रज़ा ट्रस्ट, राँची, झारखण्ड (इंडिया)

प्रिटिंग : रांची, झारखंड

तादाद : 1000

कीमत : 10-/

मेरी जिंदगी का मक़सद तेरे दीन की सरफराज़ी!
इसलिए मैं मुसलमान इसलिए मैं नमाज़ी !!

अल्लाह फ़रमाता है :
"ऐ ईमान वालों अगर तुम खुदा के दीन की मदद करोगे अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा।"
(तर्जमा कंजुल ईमान, सूरह मुहम्मद, आयत नं. 7)

ऐ जज्बा-ए-दिल गर चाहूँ तो हर चीज मयस्सर आ जाए !
मंजिल के लिए पहल करूँ और सामने मंजिल आ जाए !!

नोटः- किताब की कंपोज़िंग में हालाँकि बहुत एहतियात बरती गई है, मगर फिर भी पढ़ने वालों से गुज़ारिश है कि टाइपिंग वग़ैरा में कोई ग़लती नज़र आए तो इत्तेला देकर शुक्रिया का मौक़ा दें।

पेशे लफ्ज

हम्द व सना

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

या अल्लाह, तमाम तारीफे तेरे लिए, तू ही तारीफ के लायक है, तेरी ज़ात बेमिस्ल व यकता है, तू हमेशा से है, हमेशा रहेगा। तू एक है, पाक है, तू ही इबादत के लायक है। तू ही सारी चीजों को बनाने वाला है। तू ही सारे जहां का रब है। या अल्लाह तू मेरा खुदा, मैं तेरा बंदा/बंदी, तूने मुझे इबादत के लिए बनाया और कुरआन मेरे हिदायत के लिए उतारा, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को राहे हिदायत और तरीका ए सुन्नत के लिए भेजा, औलिया का सिलसिला वसीला के लिए कयामत तक जारी रखा ताकि मैं कुरआन से हिदायत पाउँ, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सुन्नतों को अपनाउं और औलिया के वसीले से ईमान वाला बन जाउँ,

ऐ मेरे रब तेरा एहसाने अज़ीम है की आदम अलैहिस्लाम को अपने कुद्रत वाले हाथ से बनाया और उनकी औलाद हमे बनाया और सबसे बड़ा एहसान ये है कि जिस हबीब को तूने अपने नूर की तजल्ली से बनाया उसका उम्मती हमे बनाया यानी अशरफुल मख़लुक बनाया और शुक्र है तेरी दुनियावी और उखरवी नेयमतों का जिसे मैं शुमार भी नहीं कर सकता। या अल्लाह तुझ से अज़ीम, रहीम, करीम, मतीन, अलीम, हलीम, हकीम व बातिन कोई नही ।

दरूद व सलाम हो नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जिसे तूने अपनी नूर की तजल्ली से बनाया और सारे जहां के लिए रहमत बनाकर हम गुनहगार उम्मतियों का नबी बनाया दरूद व सलाम हो असहाब पर और नबी के आल पर जिनका सिलसिला तूने कयामत तक जारी रखा, और सलामती हो उन तमाम मोमिन मोमिनात पर जिन्होंने तुझे राज़ी किया।

अल्लाह को राज़ी किये बग़ैर
सवाब का उम्मीद न रखो

तौबा व तक़्वा के बग़ैर
अल्लाह की रज़ा का उम्मीद न रखो

इल्म व हिदायत के बग़ैर
तौबा व तक़्वा का उम्मीद न रखो

उलमाए हक़ व औलिया अल्लाह से निस्बत के बग़ैर
इल्म व हिदायत का उम्मीद न रखो।

दुनिया को तर्क किये बग़ैर
ज़न्नत का उम्मीद न रखो

फेहरिस्त

अज़ाब क्यों

कुरआन में अल्लाह फ़रमाता है

مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَ اٰمَنْتُمْ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا

(तर्जुमा) **अल्लाह तुम्हें अज़ाब देकर क्या करेगा अगर तुम हक़ मानो और ईमान लाओ और अल्लाह है इनाम देने वाला जानने वाला** (सूरह-निसा, आयत न. 147)

अज़ाब दो तरह के हैं 1. दुनियवी अज़ाब और 2 आख़िरत का अज़ाब। आख़िरत का अज़ाब भी दो तरह का है 1. कब्र का अज़ाब और 2 जहन्नम का अज़ाब। अल्लाह त'आला ने हमें ईमान लाने, इल्मे दीन हासिल करने और नेक अमल करने के लिए बनाया है । जो शख़्स इन तीनों के मुताबिक़ ज़िन्दगी नहीं गुजारता गोया वो अल्लाह त'आला की नाफ़रमानी करता है यही नाफ़रमानी अल्लाह की नाराज़गी का सबब है।

जान लो कि कोई भी अज़ाब अल्लाह की नाराज़गी की वजह से होता है और अल्लाह की नाराज़गी तमाम हक़ बातों पर ईमान न लाने, ईमान की कमज़ोरी, अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी, अल्लाह को भूलने, अल्लाह की नाशुक्री, बातिल चीजों से मुहब्बत, नफ़्से अम्मारा की इताअत (फरमाबरदारी) करने, शैतानी खसलतों को अपनाने, दुनिया व दुनियवी चीज़ों से मुहब्बत करने, कुफ़्फ़ार के तौर तरीके को अपना कर सुन्नत व शरीअत की खिलाफवर्ज़ी करने, मुनाफिकों से सख़्ती व जिहाद करने के बजाए उनसे दोस्ती व इत्तेहाद करने में है।

गुनाहों की जड़ दुनियवी ज़िन्दगी को पसन्द करना और उख़रवी ज़िन्दगी को भूल जाना है।

नफ़्से अम्मारा और शैतान का ग़लबा दुनियादारी के वजह से है और दुनियादारी का ग़ल्बा माल की मुहब्बत की वहज से है और हुब्बे माल का ग़ल्बा कुफ्फ़ार के तौर तरीकों को अपनाने की वजह से है।

फ़रमाने मुस्तफा ﷺ है दुनिया काफ़िर के लिए ज़न्नत और मोमिन के लिए कैद़ खाना है (यानी मोमिन के लिए दुनियवी ज़िन्दगी कुफ़्फ़ार के तौर तरीके के मुताबिक़ गुज़ारने की जगह नहीं है) जिहाज़ा मोमिन/मुसलमान को चाहिए की अपने अफ़'आल व अक्वाल काफ़िरों के तौर तरीकों से अलग हो।

हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं जो ग़ैर मुस्लिमों के तरीक़े पर अमल करे वोह हमारे गिरोह से नहीं। (मुस्नदुल-फिरदौस)

गुनाह क्यों

हदीस : हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : **दुनिया की महब्बत तमाम गुनाहों की जड़ (असल) है।**(मुकाशिफतुल कुलूब, बाब 31)

वाज़ेह हो जब इंसान आख़िरत की बजाए दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द करता है तो गुनाह को करने के लिए मजबूर और अल्लाह त'आला से दूर हो जाता है।

अल्लाह फ़रमाता है (तर्जुमा) : **काफ़िर दुनिया की ज़िन्दगी पर इतरा गए और दुनिया की ज़िन्दगी आख़रित के मुक़ाबले नहीं मगर कुछ दिन बरत लेना (सूरह-रअद, आयत न. 26)**

गुनाहों की तमाम अक़साम जैसे कुफ़्र व शिर्क व निफ़ाक़, सगीरा व कबीरा, फ़िस्क़ व फ़ुजूर, नाजाइज़ व हराम, ऐलानिया व ख़ूफ़िया में मुब्तला हो जाने की वजह यही दुनिया की महब्बत है यानी आख़रित को भूल कर दुनिया को तरजीह देना।

दुनिया को तर्क करना असल नेकी है

दुनिया की महब्बत दिल से निकाले बग़ैर तौबा मुम्किन नहीं। बग़ैर तौबा के हक़ीकी नेकी नहीं। हक़ीक़ी नेकी व तौबा के लिए दुनिया की महब्बत दिल से निकालना शर्त है। जो आख़रित से महब्बत करके उख़रवी ज़िन्दगी को हासिल करने के लिए सिर्फ़ दुनियवी चीज़ों को ज़रूरत के तहत इस्तेमाल करे वोह कामयाब हो जाएगा । अगर आख़रित को भूल कर दुनियवी चीज़ों से महब्बत करे और कुफ़्फ़ार की तरह दुनियवी ज़िन्दगी को पसन्द करे और कुफ़्फ़ार के तौर तरीके को अपनाए वोह हलाक़ हो जाएगा।

दुनिया की मिसाल गधे की तरह है जैसे कि मुसाफ़िर अपनी मंज़िल तक पहुंचने के लिए गधे का इस्तेमाल करता है वैसे ही तू आख़रित का मुसाफ़िर है और दुनियवी ज़िन्दगी एक सफ़र है और जितने भी इस्तेमाल के सामान है सब गधे की मानिन्द है लिहाज़ा तेरा माल व दौलत, सोना, चांदी, मकान, दुकान, मोबाईल, कंप्यूटर, कार, बाइक वग़ैरह चीज़े सब लानत के क़ाबिल हैं जो मौत के बाद साथ नहीं जाती। लिहाज़ा इन दुनियवी चीज़ों से महब्बत न करते हुए सिर्फ ज़रूरतन इस्तेमाल कर और हो सके तो जरूरत भी कम कर ले ये ख़ास लोगों यानी अल्लाह वालों की अलामत हैं। याद रख दुनिया व दुनियवी चीज़ों की ज़रूरत जाइज़ है लेकिन महब्बत नाजाइज़ है यहां तक की कुफ़्र है।

फ़रमाने नबवी है कि दुनिया दुनियादारों के लिए छोड़ दो, जिस ने अपनी ज़रूरत से ज़्यादा दुनिया ले ली उस ने बेख़बरी में अपने लिए हलाकत ले ली। राहे खुदा में ख़र्च होने वाला माल बाक़ी रहता है (मुकाशिफ़तुल कुलूब)

नुबुव्वत से क़यामत तक का पाँच दौर

हदीस : रसूल ﷺ ने फरमाया **(पहला दौर)** "तुम्हारे दरमियान नुबुव्वत बाक़ी रहेगी, जब तक अल्लाह चाहेगा, फिर उसे उठा लेगा, जब उठाना चाहेगा; **(दूसरा दौर)** फिर ख़िलाफ़ते राशिदह होगी, वो तब तक बाक़ी रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा, फिर उसे (भी) उठा लेगा, जब उठाना चाहेगा; **(तीसरा दौर)** फिर काट डालने वाली हुकूमत होगी, वो तब तक बाक़ी रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा, फिर उसे (भी) उठा लेगा, जब उठाना चाहेगा; **(चौथा दौर)** फिर ज़ोर-ज़बरदस्ती वाली हुकूमत होगी, वो तब तक बाक़ी रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा, फिर उसे (भी) उठा लेगा, जब उसे उठाना चाहेगा; **(पाँचवा दौर)** फिर (आहख़र में) नुबुव्वत के तरीके पर खिलाफ़त (दुबारा) क़ायम होगी (यानी हज़रत महदी अलैहिस्सलम और हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम का ज़माना)", फिर रावी (या आक़ा) ख़ामोश हो गए." (मुस्नद इमाम अहमद, हदीस न. 18406)

यानी दौरे नुबुव्वत से क़ियामत तक दुनिया में होने वाली हुकूमतें पांच तरह की होंगीः

1. निज़ामे नुबुव्वत (हमारे नबी ﷺ का हयाती दौर)

2. निज़ामे ख़िलाफ़ते राशिदह (नुबुव्वत ही के तरीक़े पर),

3. निज़ामे काट-मार कि जो जिंदा बचा वही बादशाह रहा,

इन तीनों तरीक़ों का जमाना गुज़र चुका है; इस वक़्त जो दौर है वो है चौथे तरीक़े काः

4. 'मुल्कन् जब्-रिय्यन' यानी जोर-ज़बरदस्ती की हुकूमत, ई. 2024 इसी दौर में है इस निज़ाम का इख़्तिताम भी क़रीब है, इन्-शा अल्लाह !हां आख़िर में वही होगा जो शुरू में थाः

5. 'ख़िलाफ़तन् अला मिन्हाजिन् नुबुव्वह' यानीः नुबुव्वत ही के तरीक़े पर फिर से खिलाफ़त क़ायम होगी. ये क़ियामत के क़रीब सबसे आख़िरी दौर होगा, जब ख़लीफ़तुल्लाह, इमाम महदी (रदियल्लाहु अन्हु) पूरे जाहो जलाल के साथ रूनुमा होंगे, इन्-शा अल्लाह !

फिर मुसलमानों की बेबसी दूर होगी, उनके दर्द का इलाज होगा.

फ़िलिस्तीन, दारुल् ख़िलाफ़त होगा; और कश्मीर, यमन, सीरिया, उईगुर वगैरह के बेबस मुसलमानों की आहें कुफ़्फ़ार पर अज़ाब बनकर टूटेंगी. (मक़ालाते अहसनी, पेज 241)

हर आने वाला दौर पहले से बुरा होगा

हजरत अनस रदीयल्लाहु अन्हु से रिवायत है के, अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमायाः"हर आने वाला ज़माना पहले ज़माने से बुरा होगा। "(बुखारी शरीफ, हदीस 7068)

ज़ालिम बादशाह का दौर

हज़रत जुबैर बिन अदी रदियल्लाहु त'आला अन्हु का बयान है कि हम लोग हज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर होकर, हज्जाज (ज़ालिम बादशाह) के जुल्मों की शिकायत करने लगे। तो उन्होंने फरमाया कि तुम लोग सब्र करो। क्योंकि अब जो ज़माना तुम पर आयेगा इससे भी बदतर ही होगा। यहाँ तक कि तुम अपने रब से मुलाकात करोगे। मैनें यह बात तुम्हारे नबी ﷺ से सुनी है। (मिशकात, जिल्द 2, पेज 462)

नोट - निज़ामे ख़िलाफ़ते राशिदह के बाद निज़ामे काट-मार का दौर आया इस दौर में हज्जाज एक ज़ालिम बादशाह गुजरा हो अपनी तलवार से एक लाख बीस हज़ार इन्सानों को कत्ल किया। और उसकी लड़ाईयों में या उसके हुक्म से जो लोग कत्ल हुए उनको तो कोई गिन ही नहीं सका। सहाबा किराम और ताबेज़ीन को भी इस बदबख़्त ज़ालिम ने बड़ी बड़ी ईज़ाऐं दीं। बाज़ो को कैद में रखा। बहुतो को कोड़ो से पिटवाया और कुछ को जिब्ह किया।

लेकिन इसके बाद जो दौर (यानी नुबुव्वत से कयामत का चौथ दौर जिसका जिक्र पिछले पेज में है) यानी मौजूदा दौर (ई 2024) वो इससे भी सख़्त व बदतर व जुल्म का दौर है जैसा कि उपर हदीस में है। ऐसे दौर में ईमान और जान दोनो खतरे में है और इसकी वहज खुद कौम की बदअक़ीदगी और बद आमालियों के वजह से है क्योंकि हदीस में है (तर्जमा) : **हज़रत यहया बिन हाशिम और हजरत यूसुफ बिन इस्हाक से ! रिवायत है कि नबी ﷺ का इरशाद पाक है कि "जैसे तुम होगे वैसे ही तुम्हारे सरदार (बादशह) मोकर्रर किये जायेंगे।" (वैहेकी)**

दुनियादारी का दौर

हदीस : फरमाने नबवी ﷺ है कि जल्द ही तुम्हारे बाद एक कौम आने वाली है जो दुनिया की खुशरंग निअमतें (लजीज़ गिजाए/कॉल ड्रिंक) खायेंगे,

खुश कदम घोड़ों (बाइक/कार) पर सवार होंगे। बेहतरीन, हसीन व खूबसूरत औरतों से निकाह करेंगे, बेहतरीन रंगों वाले कपड़े पहनेंगे, उन के मामूली पेट कभी नहीं भरेंगे, उन के दिल ज्यादा दौलत पर भी कनाअत (सब्र) नहीं करेंगे। सुबह व शाम दुनिया को माअबूद समझ कर उस की इबादत करेंगे, उसे अपना रब समझेंगे, उसी के कामों में मगन और उसी की पैरवी में गामजन रहेंगे। जो शख्स उन लोगों के जमाना को पाये, उसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की वसीयत है कि वह उन्हें सलाम न करे, बीमारी में उन की अयादत (देखा) न करे, उन के जनाजों में शामिल न हो और उन के सरदारों (इमाम, सदर , सेक्रेटरी) की इज्जत न करे, और जिस शख्स ने ऐसा किया उस ने इस्लाम को मिटाने में उन की मदद की। (मुकाशफुतुल कुलूब, बाब न. 38, पेज 249)

माल की मुहब्बत ही दुनियादारी है

हज़रते अताअ बिन जियाद कहते हैं मेरे सामने दुनिया तमाम जीनतों से सज कर आई तो मैं ने कहा मैं तेरी बुराई से अल्लाह की पनाह चाहता हूं। दुनिया ने कहा अगर तुम मेरे शर (ख़तरात) से बचना चाहते हो तो रुपये पैसे से दुश्मनी रखो क्यों कि दौलत और रुपये पैसे हासिल करना दुनिया को हासिल करना है जो उन से अलग थलग रहे वह दुनिया से बच जाता है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 38, पेज 251)

नोट : माल व दौलत हासिल करने का अलस मक़सद व उससे मुहब्बत रखना कुफ़्फार का तौर तरीका है । हमारे आका ﷺ का फरमान है ये दुनिया कुफ़्फ़ार (यानी ग़ैर मुस्लिमों) के लिए ज़न्नत है जिलाजा ये दुनियावी माल व दौलत कुफ्फ़ार का ज़न्नत का चीज है हम मोमिन व मुसलमान को उस माल व दौलत को जरूरतन इस्तेमाल में लाना चाहिए और माल व दौलत से मुहब्बत नहीं करना चाहिए क्योंकि ये लानती चीज है जैसा कि एक हदीस पाक मे हुजूर ﷺ ने फ़रमाया कि ये दुनिया और दुनिया की सारी चीजे लानती है सिवाये अल्लाह की याद (और हक की मुहब्बत का)

दौलत की लालच में ईमान बर्बाद करेंगे

फ़रमाने नबवी ﷺ है कि जिसने किसी दौलतमन्द की उम्मीद की, दौलत की वजह से ताज़ीम की उस का दो हिस्सा ईमान बरबाद हो गया। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 35, पेज 235)

सिर्फ ख्वाहिशात से मोहब्बत करने वालों का दौर

हदीस : हज़रते हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबए किराम में तशरीफ़ लाये और फ़रमाया कौन है जो अल्लाह तआला से अंधेपन का नहीं बल्कि बसारत (रौशनी) का सवाल करता है? बा-ख़बर हो जाओ, जो दुनिया की तरफ माइल हो गया और उस से बे-इन्तेहा उम्मीदें रखने लगा उसका दिल अन्धा हो गया और जिसने दुनिया से अलाहिदगी करली और उस से कोई ख़ास उम्मीदें न रखीं, अल्लाह तआला उसे नूरे बसीरत अता फरमा दिया, वह तालीम के बगैर इल्म और तलाश के बग़ैर हिदायतयाब (हिदायत हासिल कर लिया) हो गया। आख़िरी जमाने मे तुम्हारे बाद एक क़ौम आएगी जिनकी हुकूमत की बुनियाद क़त्ल और ज़ुल्मो सितम पर होगी, जिनकी अमीरी व मालदारी बुख़्ल (कंजूसी) व तकब्बुर (शोहरत) से भरपूर होगी और नफ़्सानी ख़्वाहिशात के सिवा उन्हें किसी चीज़ से मुहब्बत नहीं होगी। ख़बरदार तुम में से कोई अगर वह वक़्त पाये और मालदारी की ताक़त रखते हुए गरीबी पर राज़ी हो जाये, मुहब्बत पा सकने के बावजूद उन से अदावत पर राज़ी है और अल्लाह की रज़ा में इज्ज़त हासिल कर सकने के बावजूद मलामत (यानी लोगो के नजदीक पागल जैसे) ज़िन्दगी बसर करे तो अल्लाह तआला उसे पचास सिद्दीकों (वलियों) का दर्जा देगा। (मुकाशफुतुल कुलूब, बाब न. 31, पेज 192)

बे काम का मुसलमान

हज़रत इब्ने उमर रदीयल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवस्सल्लम ने इरशाद फरमाया बेशक लोगो की मिसाल उन 100 ऊंटों की तरह है जिनमे से एक भी सवारी के क़ाबिल न हो।(तिर्मिज़ी)

इस हदीस का मतलब यह है कि मुनाफ़िक़ व फासिक़ फ़ज़ीर क़िस्म के लोग बहुत कसीर तादाद में होंगे लेकिन मुत्तक़ी, इखलास वाले और जिहाद करने वाले बहुत कम या न के बराबर होंगे और ये क़ुर्बे क़यामत की निशानी है।

नालायक मुसलमान और उसका अंजाम

हदीस : हज़रत सोबान रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल ने फरमाया अन करीब तमाम धर्म की कौमे मुसलमानों पर यूं टूट पड़ेगी जैसे खाने वाले खाने के बर्तन पर टूट पड़ते हैं सहाबा रदिअल्लाह अन्हु ने कहा क्या ऐसा मुसलमानों की आबादी की कमी के वजह से होगा आपने फरमाया मुसलमान उस जमाने में

ज्यादा होंगे लेकिन सैलाब की झाग (कोई काम का नही) की तरह, दुश्मन के दिल से मुसलमानों का रोब व दबदबा निकल जाएगा (यानी मुसलमानों से काफिर नहीं डरेंगे) तुम्हारे दिल में वहन डाल दी जाएगी सहाबा रदिअल्लाहु अन्हुम ने पूछा कि वहन क्या चीज है आपने फरमाया दुनिया से मोहब्बत और मौत से नफ़रत (सुनन इब्ने दाउद, हदीस न. 2245

किसी के दिल मे ख़ौफ़े खुदा न होगा

हदीस : फरमाने नबवी है जिसे हज़रत मअक्ल बिन यसार रदीयल्लाहु अन्हु ने रिवायत किया है कि लोगों पर ऐसा जमाना आएगा जब लोगों के दिलों में कुरआन मजीद बदन के कपड़ों की तरह पुराना हो जाएगा (यानी कुरआन का कोई अहमियत नही) उनके तमाम अहकामात तमअ (लालच) पर मबनी होंगे, किसी के दिल में खौफे खुदा नहीं होगा, अगर उनमें से कोई एक नेकी करेगा तो कहेगा यह मुझसे कबूल करली जाएगी और अगर बुराई करेगा तो कहेगा यह बख़्श दी जाएगी। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 81, पेज 466)

दिल मे ख़ौफ़े खुदा न रहने का नतिजा

हज़रत अबू दर्राक़ रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि-

जिसने इल्मे फ़िक़ह पर कनाअत की और तक़वा इख्तियार न किया तो वह फासिक फ़ज़ीर है।" इनका मफहूम यह है कि जिसने बग़ैर परहेज़गारी के इल्मे फ़िक़्ह व शरीअत को पसन्द किया वह फासिक व फाजिर बन जाता है। ।(काशफूल महजूब, पेज 47 हिंदी)

ज़ाहिल आबिद व फ़ासिक़ औल्मा का दौर

फ़रमाने नबवी है कि आखिर ज़माना में जाहिल इबादत गुज़ार और फासिक आलिम होंगे। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 84, पेज 476)

आलिमों के दिल से इल्म निकल जायेगीः

हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रते कअब रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि आलिमों के इल्म हासिल कर लेने के बाद कौन सी चीज़ उनके दिलों से इल्म निकाल लेती है। हज़रते कअब रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा लालच, हिर्स और लोगों के आगे हाथ फैलाना। किसी शख़्स ने हज़रते फुज़ैल रहमतुल्लाह अलैह से इस बात की तशरीह चाही तो उन्होंने जवाब दिया कि इंसान लालच में जब किसी चीज को अपना मकसूद व मतलूब (पाने की चाहत) बना लेता है तो उस का दीन (ईमान) रुख़सत हो जाता है। लालच यह है

कि इंसान कभी इस चीज़ की और कभी उस चीज़ की तलब में रहता है यहां तक कि वह सब कुछ हासिल करना चाहता है और कभी उस मकसद के हुसूल के लिए तेरा साबिक़ा (किसी से पाला पड़ना) मुख़्तलिफ लोगों से पड़ेगा। जब वह तेरी ज़रूरतें पूरी करेंगे तो तेरी नाक में नकेल डाल कर जहां चाहेंगे ले जायेंगे। वह तुझ से अपनी इज्ज़त चाहेंगे और तू से रुसवा हो जायेगा और इसी मुहब्बते दुनिया के सबब जब भी तू उन के सामने से गुज़रेगा तो उन्हें सलाम (ताज़ीम) करेगा और जब वह बीमार होंगे, तू अयादत को जायेगा और यह तेरे तमाम अफ़आल ख़ुदा की नाराज़गी का सबब होंगे। तेरे लिए बहुत अच्छा होता अगर तू उन लोगों का मुहताज न होता। (मुकाशफ़ुतुल क़ुलूब, बाब 33, पेज 222)

हक़ीक़ी पीर बहुत मुश्किल से मिलेंगे

हुज़ूर बंदा नवाज़ गेसु दराज़ सय्यद हुसैनी फरमाते है मौजूदा ज़माने में (यानी आज से 700 साल पहले) पीरी मुरीदी की जिस कदर मट्टी पलीद है ना क़ाबिले बयान है ना पीरों में पीरों जैसी शान नज़र आती है। न मुरीदों में मुरीदों जैसी किसी बात है। सिर्फ एक रस्म है जो जारी है। ये हकीकत है के मौजूदा ज़माना में सही मायने में पीर बड़ी मुश्किल और जद्दो जेहद से ही मिल सकता है। (रूहे तसव्वुफ़)

नोट : हुज़ूर बंदा नवाज़ गेसुएदराज़ सय्यद हुसैनी का पैदाइस 1 रनसल 1321 ई में हुआ और अभी 2024 ई चल रहा है। यानी 700 साल का फैसला । हमारे नबी सल्ललालहो अलैहि वस्सलम का फरमान है हर आने वाला जमाना पहले से बुरा होगा तो अंदाजा लगाए 700 साल के बाद आज 2024 का दौर कितना बुरा होगा।

दुनियादारी का अंज़ाम

आज मुसलमानों को दीनदार बनकर अपना ईमान मजबूत करने की जरूरत है । ये बात समझ लेना चाहिए कि दुनियादारी के वजह से ईमान व अक़ीदे में कमजोरी और बिगाड़ पैदा हुआ और कमजोर ईमान के सबब ज़हालत व बदअमालियां और मुआशरे में तमाम खराबियां, बुराइयाँ और गुमराहियाँ पैदा हुई है नतीजतन अल्लाह का अज़ाब, दुश्मने इस्लाम (कुफ्फार) के हौसले बढ़े,नफ्स और शैतान गालिब हुए, ज़ालिम बादशाह मुसल्लत किये गए, भगवा लव ट्रेप, मोबलीचिंग और यूनिफ़ॉर्म सिविल कोड जैसे मामले पैदा हुए, आपसी महब्बत खत्म हुई, बालितो से जिहाद व मुखालफल के बजाय इत्तेहाद और

मुहब्बत की चाहत है । तमाम हालात का ईलाज यही है कि दुनियादारी को तर्क किया जाए और दीनदारी की चाहत दिल में पैदा करके ईमान, इल्म व अमल में दुरूस्तगी और मज़बूती लाए।

दुनिया की मुहब्बत दीन के लिए रूकावट है

कुत्बुल अकताब ने अपनी ज़बान मुबारक से फरमाया अल्लाह और बंदों के बीच दुनिया से ज़्यादा कोई हिजाब नहीं। जिस कद्र दुनिया में मुब्तला हो जाता है उसी क़द्र खुदा से दूर और जुदा हो जाता है। हज़रत कुत्बुल आफताब ने फ़रमाया कि अल्लाह त'आला ने जिस वक़्त दुनिया की मुहब्बत (रुपया पैसा) को यहाँ भेजा तमाम फरिश्ते रो पड़े, मगर शैतान खुश होकर कहने लगाः अच्छा हुआ औलादे आदम में फितना तो पैदा हुआ। उसकी मोहब्बत की वजह से भाई-भाई को मार डालेगा और अपनों में मुहब्बत न रहेगी।

शहर के शहर उसी की मुहब्बत में ख़राब और वीरान हो जाएँगे, एक दुसरे में जुदाई और अदावत पैदा होगी और आख़िरकार खुद ही हलाक हो जाएँगे, मगर दुनिया बरकरार रहेगी।

अलगरज़ इस दुनियावी दौलत की मोहब्बत को शैतान ने सर आँखों पर रखा। बड़ी ताज़ीम व तकरीम की। फरमाने खुदावन्दी हुआः "इबलीस तूने दुनिया की मुहब्बत (यानी माल व दौलत) की हद से ज़्यादा ताज़ीम क्यों की!" इब्लीस ने कहाः मैंने इसलिए इस दुनिया की ताज़ीम की कि जो कोई इसे दोस्त रखेगा वह मेरे दोस्तों में से होगा। मैं उसको यार बनाकर फरेब दूँगा और मुरदार दुनिया में उसे फँसाकर तमाम इबादात और खैरात से अलग रखूँगा। पस जब दुनियादार मेरे पास होगा जल्द हलाक होगा और उसका माल दूसरों को नसीब होगा। (हज़रत बख़्तियार क़ाकी, पेज 119)

दुनिया की मुहब्बत का अलामत

कुफ़्फार के जाहिरी व बातिनी तौर तरिका का अपनाने के लिए सुन्नत व शरीअत को छोड़ देना यही दुनिया की मुहब्बत है।

अपनी हालत खुद से बदलो

कुरआन में है : बेशक अल्लाह किसी क़ौम से अपनी नेअमत नहीं बदलता जब तक वह खुद अपनी हालत न बदल दें और जब अल्लाह किसी क़ौम को अज़ाब देना चाहे तो वह फिर नहीं सकती और उसके (अल्लाह के) सिवा उसका कोई हिमायती (मददगार) नहीं। (सूरह र'अद, आयत नं 11)

खुदा ने आज तक उस क़ौम की हालत नहीं बदली
न हो जिस को ख़याल खुद अपनी हालत को बदलने का

तमाम मुल्क अल्लाह के है

कुरआन में है (तर्जमा) : सुन लो बेशक अल्लाह ही के मुल्क हैं जितने आसमानों में हैं और जितने ज़मीनों में। (सूरह युनूस, आयत न. 66)

अल्लाह मुल्क के मालिक

कुरआन में है (तर्जमा कन्जुल ईमान) : ऐ अल्लाह मुल्क के मालिक, तू जिसे चाहे सलतनत दे और जिससे चाहे सलतनत छीन ले और जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे जिल्लत दे सारी भलाई तेरे ही हाथ है बेशक तू सब कुछ कर सकता है। (सूरह इमरान, आयत 26)

हर काम अल्लाह के हुक्म से

जान लो कि हर काम अल्लाह के हुक्म से ही होता है। कुरआन में है : (तर्जुमा) **"उसके (अल्लाह के) हुक्म से आसमान और ज़मीन क़ायम हैं"।** (सूरह रूम, आयात 25) कुरआन में दूसरी जगह है (तजुमा) **"उसी के हैं जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं सब उसके (अल्लाह के) ज़ेरे हुक्म हैं"** (सूरह रूम, आयात 26)

कश्ती भी अल्लाह के हुक्म से चलता है

अल्लाह फ़रमाता है : वही है कि तुम्हें खुश्की और तरी में चलाता है यहां तक कि जब तुम किश्ती में हो (सूरज यूनुस, आयत न. 22)

मुसीबत भी अल्लाह के हुक्म से

अल्लाह फ़रमाता है तर्जमा : कोई मुसीबत नहीं पहुंचती मगर अल्लाह के हुक्म से, और जो अल्लाह पर ईमान लाए अल्लाह उसके दिल को हिदायत फ़रमा देगा। (सूरह- तगाबुन, आयत न. 11)

अल्लाह के हुक्म के बगैर मौत नहीं आ सकती

अल्लाह फ़रमाता है (तर्जमा) : कोई जान बे हुक्मे खुदा मर नहीं सकती। (सूरह इमरान, आयत न. 145)

अल्लाह के हुक्म के बगैर जादु से भी नुक़सान नहीं

जादु से ज़रर (नुक़सान) नही पहुँचा सकते किसी को मगर खुदा के हुक्म से

पहुँचा सकते है। (सूरह बक़रह, आयत न.102)

बे हुक्मे खुदा शैतान भी कुछ नही कर सकता है।

वो (नाफ़रमानी वाला) मशवरा तो शैतान ही की तरफ़ से है इस लिये कि ईमान वालों को रंज दे और वो (शैतान) उनका (ईमान वालों का) कुछ न बिगाड़ सकता बे हुक्मे खुदा के और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिए। (सूरह मुज़ादला, आयत न. 11)

ईमान अल्लाह के हुक्म से

अल्लाह फ़रमाता है : किसी जान की कुदरत (इख़्तियार) नहीं कि ईमान ले आए मगर अल्लाह के हुक्म से (जब तक अल्लाह हुक़्म न दे)। (सूरह यूनुस, आयत न. 100)

हिदायत अल्लाह के हुक्म से

अल्लाह उसे हिदायत देता है जो अल्लाह की मर्ज़ी पर चला सलामती के रास्ते और उन्हें अंधेरियों से रौशनी की तरफ़ ले जाता है अपने हुक्म से और उन्हें सीधी राह दिखाता है (सूरह माइदा, आयत नं. 16)

हुक्में खुदा की हकीक़त और अकसाम

हज़रत कतादा से रिवायत है के हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह त'आला से अर्ज़ किया की तेरी रज़ा और नाराज़गी की अलामत क्या है? अल्लाह त'आला ने इरशाद फ़रमाया तुम्हारे (लोगों के) ऊपर नेक लोगों को बादशाह बनाना मेरे राज़ी होने की अलामत है और बुरे लोगों को बादशाह बनाना मेरे नाराज़ होने की आलमत है। (अज़ाबे इलाही और उसके असबाब, पेज 97)

इससे मालूम हुआ की अल्लाह का हुक़्म 2 तरह का है 1 राज़ी होने के सबब, 2. नाराजगी के सबब, रजा़ के साथ हुक़्म का मामला सिर्फ ईमान वालों के लिए हैं और नाराजगी के सबब हुक़्म तमाम बातिल यानी कुफ्फ़ार, मुशरिक, मुनाफिक़, सुल्लहकुल्ली, फासिक़ फजीर और दुनियादार के लिए है।

इंसान के चाहत के मुताबिक अल्लाह का हुक्म

हम जानते है कि अल्लाह के हुक़्म के बग़ैर एक पत्ता भी नहीं हिल सकता । तो इंसान भी जो करता है या उसके साथ जो कुछ भी होता है वो भी अल्लाह के हुक़्म से होता है। अल्लाह आदिल (बदला देने वाला) है जो जैसा चाहेगा उसके

चाहत के मुताबिक अल्लाह हुक़्म देगा और अंजाम व इनआम भी। अगर किसी के साथ बुरा हुवा तो वो भी उसके (इंसान के) चाहत और अमल के मुताबिक अल्लाह का हुक़्म से हुवा क्योंकि बुरा इसलिये हुवा की वो उसी लायक था और अपने बुरे अंजाम का सबब खुद ही होगा क्योंकि अल्लाह किसी पर ज़ुल्म नहीं करता लेकिन ज़ुल्म का बदला जरूर देता है। इसी तरह अगर किसी के साथ अच्छा हुआ तो वो भी अल्लाह के हुक़्म से हुवा क्योंकि वो उसी लायक था। अल्लाह फ़रमाता है : (तर्जुमा) जो शुक्र करे वह अपने भले को शुक्र करता है और जो नाशुक्री करे तो बेशक अल्लाह बेपर्वाह है। (सुरह लुकमान, आयत न 12)

ज़ालिम बादशाह (प्रधानमंत्री) का हुकूमत अल्लाह के हुक़्म से

हज़रत अबू दरदा रदीयल्लाहु अन्हु से मरवी है- उन्होंने कहा, नेकी का हुक्म देते रहना और बुराई से रोकते रहना, नहीं तो अल्लाह त'आला तुम पर ऐसे हाकिम (प्रधानमंत्री) मुकर्रर कर देगा जो तुम्हारे बुजुर्गों का एहतेराम नहीं करेगा, तुम्हारे बच्चों पर रहम नहीं करेगा, तुम्हारे बड़े बुलायेंगे लेकिन उन की बात नहीं मानी जायेगी, वह मददगार तलब करेंगे मगर उन की मदद नहीं की जाएगी और वह बख़्शिश तलब करेंगे मगर उन्हें नहीं बख़्शा जाएगा। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 15)

इस्लामी हुकूमत का छिन'ना

रसूल ﷺ ने फरमाया इस उम्मत को बशारत दे दो कि दीनदारी के वजह से ही उसको बुजुर्गी (मर्तबा) हासिल है और शहरों पर हुकूमत (कब्जा और गिरफ्त), जब तक वह दीन का काम दुनिया के हुसूल के लिए न करें यानी मुसलमानों को दुनिया में उस वक्त तक बुज़ुर्गी और दुनिया के शहरों पर उनकी हुकूमत रहेगी जब तक वह दीन का काम दुनिया हासिल करने के लिए नही करेंगे, उनके आमाल खालिस रहेंगे। (गुनियतुत्तालिबीन, बाब 17, पेज 505)

गुनाहगार अजाब का हक़दार

कुरआन में है (तर्जमा) : ''तो डरें वो जो रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं कि उन्हें कोई फित्ना पहुंचे या उनपर दर्दनाक अज़ाब पड़े।(सूरह नूर, आयात नं. 63)

ज़ालिमो का बदला ज़ालिमों से

अल्लाह फ़रमाता हैः (तर्जमा): ''यूंही हम (यानी मेरे हुक़्म से) ज़ालिमों में

एक (ज़ालिम) को दूसरे (ज़ालिमों) पर मुसल्लत करते हैं बदला उनके किये का'' (सूरह अनआम, आयत न. 129)

'**आयत की तफ्सीर** :' हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहो अन्हु ने फ़रमाया कि अल्लाह जब किसी क़ौम की भलाई चाहता है तो अच्छों को उनपर मुसल्लत करता है, बुराई चाहता है तो बुरों को. इससे यह नतीजा निकलता है कि जो क़ौम ज़ालिम होती है उसपर ज़ालिम बादशाह मुसल्लत किया जाता है. तो जो उस ज़ालिम के पंजे से रिहाई चाहें उन्हें चाहिये कि ज़ुल्म (नाफरमानी) करना छोड़ दें. (ख़ज़ाइनुल इरफान)

ज़ुल्म व ज़ालिम का मतलब

क़ुरआन की तफ्सीर की रोशनी में ज़ुल्म का मतलब है गुनाह करना और ज़ालिम का मतलब है गुनाह करने वाला यानी गुनहगार लोग जो 2 किस्म के है 1. कुफ्फ़ार व मुश्रिक (अक़ाइद में खाराबी) 2. सगीरा-कबीरा गुनाहों के मुर्तकीब(आमाल में खराबी)

मुसलमानों का जुर्म

लोगत में जुर्म का मतलब है क़ुसूर, आरोप और शरीयत में जुर्म का माना है शरीअत और सुन्नत के खिलाफ़ काम करना यानी बातिलों से मुहब्बत और उनकी इताअत करना।

मुसलमानों का ज़ुल्म

ज़ुल्म का माना है गलत तरीके से किसी काम को करना यानी गुनाह, गलतकारी, ज्यादतियां। शरीयत में ज़ुल्म का मतलब है हुक़ूकुल्लाह और हुक़ूकूल इबाद अदा न करना करना । हुक़ूकुल्लाह अदा न करना अपने आप पर ज़ुल्म करना है। और हुक़ूकूल इबाद अदा न करना दुसरो (मख़लूख) पर ज़ुल्म करना है।

अपने आप पर ज़ुल्म़ करना

अल्लाह का फ़रमान (तर्जुमा) : बेशक अल्लाह लोगों पर कुछ ज़ुल्म नहीं करता हाँ लोग ही अपनी आप पर ज़ुल्म करते हैं। (सूरह यूनुस, आयत 44)

तौबा न करने वाल ज़ालिम है

अल्लाह का फ़रमान (तर्जुमा) : जो तौबा न करें (यानी जो गुनाह करते रहे)

तो वही ज़ालिम हैं। (सूरह हुजरात, आयत न. 11)

ज़ालिम क़ौम पर ज़ालिम बादशाह

हदीस : हज़रत यहया बिन हाशिम और हजरत यूसुफ बिन इस्हाक से ! रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु त'आला अलैहे वसल्लम का इरशाद पाक है कि "जैसे तुम होगे वैसे ही तुम्हारे सरदार (बादशह) मोकर्रर किये जायेंगे।" (वैहेकी)

ज़ालिम बादशाह अल्लाह की नाराज़गी के वजह से

हज़रत कतादा से रिवायत है के हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह त'आला से अर्ज़ किया की तेरी रज़ा और नाराज़गी की अलामत क्या है? अल्लाह त'आला ने इरशाद फ़रमाया तुम्हारे (लोगों के) ऊपर नेक लोगों को बादशाह बनाना मेरे राज़ी होने की अलामत है और बुरे लोगों को बादशाह बनाना मेरे नाराज़ होने की आलमत है। (अज़ाबे इलाही और उसके असबाब, पेज 97)

रुपया जमा करने वालो पर ज़ालिम बादशाह का अज़ाब

हज़रते अली रदीयल्लाहु अन्हु से मरवी है हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब लोग फकीरों से दुश्मनी रखें, दुनियावी शौकत व हशमत का इजहार करें और रुपया जमा करने पर लालची हो जायें तो अल्लाह त'आला उन पर चार मुसीबतें नाजिल फ़रमाता है,1 कहत साली (बेरोजगारी), 2 जालिम बादशाह (प्रधानमंत्री) , 3 खाइन (खयानत दार) हाकिम और , दुश्मनों की हैबत (जैसे बजरंग दल, शिव सेना , आर एस एस)। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 34, पेज 229)

क़ौम पर ज़ालिम बादशाह का अज़ाब

हदीस : हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हु फरमाते है के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के पास मुहाजरीन सहाब के दस लोग बैठे हुए थे मैं उनमें से दसवां आदमी था, हुजूर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने चेहरा मुबारक के साथ हमारी तरफ मुतवज्जह हुए और फरमायाः " जिस कौम में बेहयाई आम हो जाए और लोग उसका खुल्लम खुल्ला गुनाह बार-बार करने लगे तो वो कौम मुख्तलिफ बीमारी और परेशानी और ताऊन में मुब्तिला कर दी जाती है जो बीमारी उनसे पहले गुजरे हुए लोगों में मौजूद न थी और जो कौम नाप तोल में कमी करती है वो कहतसाली (बेरोजगारी), मशक्कत वो शिद्दत और

बादशाह(प्रधानमंत्र) के जुल्म में मुब्तिला कर दी जाती है और जो कौम अपने माल की जकात अदा नही करती वो रहमत की बारिश से महरूम (दूर) कर दी जाती है अगर जानवर न होते तो उनपर बारिश ही न बरसती और जो कौम अहद शिकनी/ वादा ख़िलाफी करती हैं तो अल्लाह त'आला इनपर इनके गैर (दूसरे धर्म जैसे बजरंग दल) से दुश्मन मुसल्लत कर देते है जो उनके माल वो जायदाद पर कब्जा कर लेते हैं। और जब लोगों के हुक्मरान अल्लाह त'आला के नाज़िल करदा अहकाम वो क़ुरआन के मुताबिक अमल नहीं करते और क़ुरआन मजीद के अहकाम को अहमियत और तरजीह नहीं देते तो अल्लाह त'आला उनको आपसी (लड़ाई) के अजाब में मुब्तिला कर देता हैं। (इब्ने माजा)

मुसलमानों पर कुफ़्फार का दबदबा

हदीस : हज़रत सोबान रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल ﷺ ने फरमाया अन करीब तमाम धर्म की कौमे मुसलमानों पर यूं टूट पड़ेगी जैसे खाने वाले खाने के बर्तन पर टूट पड़ते हैं सहाबा रदिअल्लाह अन्हु ने कहा क्या ऐसा मुसलमानों की आबादी की कमी के वजह से होगा आपने फरमाया मुसलमान उस जमाने में ज्यादा होंगे लेकिन सैलाब की झाग (कोई काम का नही) की तरह, दुश्मन के दिल से मुसलमानों का रोब व दबदबा निकल जाएगा (यानी मुसलमानों से काफिर नहीं डरेंगे) तुम्हारे दिल में वहन डाल दी जाएगी सहाबा रदिअल्लाहु अन्हुम ने पूछा कि वहन क्या चीज है आपने फरमाया दुनिया से मोहब्बत और मौत से नफ़रत (सुनन इब्ने दाउद, हदीस न. 2245)

बादशाहों (प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री) को बुरा न कहो बल्कि तौबा करो

हज़रत मालिक बिन दीनार फरमाते हैं कि तौरेत शरीफ़ में अल्लाह त'आला ने फ़रमाया है कि बादशाहों के दिल मेरे क़ब्ज़े में हैं जो मेरी हुक्म मानेगा मैं उस के लिये बादशाहों को रहमत बनाऊंगा और जो मेरी मुखालफत करेगा उस के लिये उन को अज़ाब बनाऊंगा फिर तुम बादशाहों को बुरा कहने में मश्गूल न हो बल्कि मेरी बारगाह में तौबा करो मैं उन को तुम पर मेहरबान कर दूंगा। (तम्बीहुल मुग्तरीन, अल बाबुल अव्वल, सब्रहम अला जोरुल हुक्काम, स. 43)

ज़ालिम बादशाह से निजात पाने का सुरत

हदीस : हज़रत उमर रदीयल्लाहु त'आला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया आख़िरी ज़माने में मेरी उम्मत को अपने हुक्मरानों

(मोदी)से सख़्त तकलीफें पहुँचेंगी उन से निजात नहीं पायेगा मगर वो शख्स जिस ने अल्लाह के दीन को पहचाना और उस पर अपनी ज़बान, हाथ और दिल के साथ जिहाद किया यह वह शख़्स है जो पूरी तरह सबक़त ले गया दूसरा वह आदमी जिस ने अल्लाह के दीन को पहचाना और उस की तसदीक की, तीसरा वह आदमी जिस ने अल्लाह के दीन को पहचाना और उस पर ख़ामोश रहा। अगर किसी को नेकी करते देखा तो उस से मोहब्बत करने लगा और अगर किसी को ग़लत काम करते देखा तो उस से नाखूश रहा। यह सब अपनी अन्दरूनी हालत के बाइस निजात पा जायेंगे। (बैहकी)

दोनों थे इख़्तियार में दुनिया भी दीन भी
देखो तो तलबगारों ने किया इख़्तियार किया

इंसानों को चाहने/चुनने का इख़्तियार है

अल्लाह फ़रमाता है : जो आख़िरत की खेती (नेयमत) चाहे हम उसके लिये उसकी खेती (नेयमत) बढ़ाएं और जो दुनिया की खेती चाहे हम उसे उसमें (दुनिया) से कुछ (फानी सामान) देंगे और आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नही। (सूरह - शूरा, आयत नं. 20)

ईमान लाना बंदों के इख़्तियार में नही।

अल्लाह फ़रमाता है : किसी जान की कुदरत (इख़्तियार) नहीं कि ईमान ले आए मगर अल्लाह के हुक्म से (जब तक अल्लाह हुक़्म न दे)। (सूरह यूनुस, आयत न. 100)

चाहत और चुनाव

कुरआन में है : कुछ ज़बरदस्ती नहीं दीन में बेशक खूब जुदा हो गई है नेक राह गुमराही से तो जो शैतान को न माने और अल्लाह को माने उसने बड़ी मज़बूत गिरह थामी जिसे कभी खुलना नहीं। (सूरह बक़रह, आयत न. 256)

अल्लाह फ़रमाता है : (तर्जुमा) बेशक हमने उसे राह बताई की हक़ मानता या नाशुक्री करता।(सुरह इंसान, आयत नं. 3)

हक़ की चाहत रखने वालों को हिदायत

अल्लाह फ़रमाता है : (तर्जुमा) अल्लाह ने तुम्हें इस्लाम की हिदायत की

अगर तुम सच्चे हो (यानी अगर तुम इस्लाम की चाहत रखते हो)। (सूरह हुज़रात, आयत 17)

चाहत ही मंजिल तक पहुँचाता है

अल्लाह फ़रमाता है : (तर्जुमा) जो आख़िरत चाहे और उसकी सी कोशिश करे और हो ईमान वाला तो उन्हीं की कोशिश ठिकाने लगी। (सूरह बनी इसराएल, आयत न. 19)

मोहब्बत ही से पाई है शिफ़ा बीमार क़ौमों ने
किया है अपने बद बख़्ती को बेदार क़ौमों ने

मुहब्बत ही चाहत है

जिससे मुहब्बत हो जाये उसी को पाने की चाहत इंसान के दिल में होती है और उसे पाने के लिए अपना कीमती वक़्त, इताअत, कुव्वत, दौलत, सेहत, जिस्म व जान लगा देता है जैसे बातिल (नफ्स़, शैतान, दुनिया) से मोहब्बत यानीं बालित को पाने की चाहत और हक़ (अल्लाह) से मोहब्बत यानी हक को पाने की चाहत है लेकिन दिल में कोई एक ही समा सकता है। एक हदीस में हज़रते अबू मूसा रादियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि पैग़म्बरे ख़ुदा सललल्लाहो अलैहे व सल्लम का इर्शाद पाक है कि- **"जिस शख्स ने अपनी (इस) दुनियाँ से मुहब्बत किया तो उसने अपनी आखिरत को खसारे में डाला और जिसने अपनी आख़िरत से मुहब्बत किया उसने अपनी दुनियाँ को नुक़सान पहुँचाया।"** (अहमद, बैहिक़ी)

बन्दो के चाहत के मुताबिक अल्लाह की अता

हदीस : रसूल ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि आखिरत हासिल करने की चाहत पर (अमल करने वाले को) अल्लाह त'आला दुनिया भी बिन मांगे देता है लेकिन दुनिया (फानी चीजें जैसे माल व दौलत) हासिल करने की नियत पर अमल करने वाले को आखिरत नहीं मिलेगी। (गुनियतुत्तालिबीन, बाब 17, पेज 505)

आदमी ज़रूर नुक़सान में

अल्लाह फ़रमाता है : बेशक आदमी ज़रूर नुक़सान में है, मगर वो नहीं जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और एक दूसरे को हक़ की ताक़ीद की और एक दूसरे

को सब्र की वसीयत की। (सूरह अस्र, आयत न. 2-3)

मुसलमान नुकसान में क्यों

अल्लाह फ़रमाता है : अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँ बरदारी करोगे तो तुम्हारे किसी काम तुम्हें नुक़सान न देगा बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है (सुरहः हुजरात, आयात न 14)

तुम्हारा भला नहीं हो सकता

अल्लाह फ़रमाता है : तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे खुदा में अपनी प्यारी चीज़ ख़र्च न करो। (सूरह- इमरान, आयत न. 92)

अल्लाह की रज़ा सबसे बड़ी है

क़ुरआन में है " तर्जमा : (कंज़ूल ईमान) " अल्लाह की रज़ा सबसे बड़ी है, यही है बड़ी मुराद हासिल करना"। (सुरह तौबा, आयत न. 72)

अल्लाह का याद सबसे बड़ा है

क़ुरआन में है "(तर्जमा कंज़ूल ईमान) : "**अल्लाह का ज़िक्र (याद) सब से बड़ा**"। (सुरह अन्कबुत, आयत न. 45)

अफसोस आज मुसलमान दो बड़ी बातों (रज़ाए इलाही व यादे इलाही) से महरूम होकर दुनियावी दौलत, शोहरत, दुकान, मकान जैसी फ़ानी चीजों के लिए अपनी किमती वक्त, सेहत, दौलत को जाया कर रहे है और आख़िरत ख़राब कर रहे।

मालो दौलत की लालच अल्लाह को भुलने का सबब

अल्लाह फ़रमाता हैः तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा तलबी (लालच) ने , यहाँ तक कि तुमने क़ब्रों का मुंह देखा (यानी मर गया) हाँ हाँ जल्द जान जाओगे (आख़िरत में), फिर हाँ हाँ जल्द जान जाओगे, हाँ हाँ अगर यक़ीन का जानना चाहते तो (अगर हक़ीक़त जानने की कोशिश करते) तो माल की मोहब्बत न रखते (सुरहः तकासुर, आयत न 1-5)

अल्लाह को भूलने वाले मुसलमान नुकसान में

अल्लाह फ़रमाता हैः ऐ ईमान वालो, तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें, अल्लाह के याद से ग़ाफ़िल न करे और जो ऐसा करे तो वही लोग नुक़सान में हैं (सुरहः मुनाफिकीन, आयत न 9)

अल्लाह से करे दूर तो ता'लीम भी फ़ित्ना , दौलत भी औलाद भी जागीर भी फ़ित्ना
नाहक़ के लिए उठे तो शमशीर भी फ़ित्ना, शमशीर ही क्या नारा-ए-तकबीर भी फ़ित्ना

अल्लाह को भूलने का अंजाम

अल्लाह फ़रमाता है : उन जैसे न हो जो अल्लाह को भूल बैठे तो अल्लाह ने उन्हें बला में डाला कि अपनी जानें याद न रही वही फ़ासिक़ हैं ।(सूरह - हस्र, आयत न. 19)

अल्लाह को भूलने वाला परेशान

अल्लाह फ़रमाता है : (तर्जुमा) जिसने मेरी याद से मुंह फेरा तो बेशक उसके लिये तंग ज़िन्दगी है और हम उसे क़यामत के दिन अंधा उठाएंगे।(सूरह ताहा, आयत 124)

अल्लाह को भूलने वाले नुकसान में

अल्लाह फ़रमाता है (तर्जमा) : तो ख़राबी है उनकी जिनके दिल खुदा की याद की तरफ़ से सख़्त हो गए हैं वो खुली गुमराही में हैं। (सूरह- जुमर, आयत न. 22)

अल्लाह को भूलने वाला शैतान का साथी है

अल्लाह फ़रमाता है : जिसे रतौंद (भुलना) आए रहमान के ज़िक्र से हम उस पर एक शैतान तैनात करें कि वह उसका साथी रहे (सुरहः जुखरूफ़, आयत न. 36)

याद किया आबाद हुआ भूल गया बर्बाद हुआ

हज़रत सलमान फारसी रादियल्लाहु अन्हु का इरशाद है कि बन्दा जब खुशी में अल्लाह को पुकारता फिर उसपर मुसीबत आ पड़ती है तो उस वक्त फरिश्ते बारगाहे इलाही में अर्ज करते हैं परवरदिगार! तेरे बन्दे पर मुसीबत आ पड़ी हैं, उसको दूर फरमा दे, इस तरह जब फरिश्ते उसकी सिफारिश करते हैं तो अल्लाह तबारक व त'आला उनकी सिफारिश कबूल फरमा लेता है और बन्दा अगर खुशी, ऐश व इशरत में अल्लाह को नहीं पुकारता (यानी याद नहीं करता) और दुख के वक्त पुकारता है तो फरिश्ते कहते हैं कि अब अल्लाह को पुकारता है और फरिश्ते उसकी शफाअत व सिफारिश नहीं करते, इसकी तौजीह फिरऔन के किस्सा से होती है कि जब डूबते वक्त फिरऔन ईमान लाया तो अल्लाह का

इरशाद हुआ. अब तौबा करता है हालांकि पहले नाफ़रमानी करता रहा। (ग़ुनियतुत्तालिबीन, बाब 15, सफा 460)

बुराई खुद की वजह से

अल्लाह फ़रमाता है तर्जमा : ऐ सुनने वाले तुझे जो भलाई पहुँचे वो अल्लाह की तरफ से है और जो बुराई पहुंचे वो तेरी अपनी तरफ से है। (कंजुल ईमान , सूरह निसा, आयात न - 79)

मुसीबत खुद की वजह से

अल्लाह फ़रमाता है (तर्जुमा) : जो मुसीबत पहुंची वह इसके सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया (यानी खुद से गुनाह किया) । (सूरह शूरा, आयत न. 30)

मुसलमान अपनी परेशानी का वजह खुद है

क़ुरआन में है : बेशक हम उस शहर वालों पर आसमान से अज़ाब उतारने वाले हैं बदला उनकी नाफ़रमानियों का। (सूरह-अंकबूत, आयात न. 34)

खुद का गुनाह खुद के लिए खतरा

अल्लाह फ़रमाता है (तर्जुमा) : ऐ लोगो तुम्हारी ज़ियादती तुम्हारे ही जानों का वबाल हैं दुनिया के जीते जी बरत लो फिर तुम्हें हमारी तरफ़ फिरना है उस वक़्त हम तुम्हें जता देंगे जो तुम्हारे कौतुक थे (सूरह यूनुस, आयत न. 23)

खुद का भला व बुरा खुद के वजह से

अल्लाह फ़रमाता है (तर्जुमा) : "अगर तुम भलाई करोगे अपना भला करोगे और बुरा करोगे तो अपना" (सूरह बनी इसराएल, आयत न. 7

अपना भलाई और बुराई अपने ऊपर है

अल्लाह फ़रमाता है (तर्जुमा) : "जो राह पर आया वह अपने ही भले को राह पर आया और जो बहका तो अपने ही बुरे को बहका और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी और हम अज़ाब करने वाले नहीं जब तक रसूल न भेज लें।" (सूरह बनी इसराएल, आयत न. 15)

जैसा करनी वैसा भरनी

सरकारे दो आलम का फरमाने आलीशान है कि "नेकी पुरानी नही होती

और गुनाह भुलाया नही जाता, जजा देने वाला यानी अल्लाह कभी फ़ना नही होगा, लिहाजा जो चाहे कर, तू जैसा करेगा वैसा भरेगा।"(बहरूद्दमुअ, पेज 38)

अल्लाह को अज़ाब करते देर नहीं लगता

अल्लाह फ़रमाता है : तर्जमा : "वही है जिसने ज़मीन में तुम्हें नायब किया और तुम में एक को दूसरे पर दर्जो बलन्दी दी कि तुम्हें आज़माए उस चीज़ में जो तुम्हें अता की बेशक तुम्हारे रब को अज़ाब करते देर नहीं लगती और बेशक वह ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है" (कंज़ुल ईमान, सुरह अनाम, आयत न. 165)

माल की मुहब्बत ही दुनियादारी है

हज़रते अताअ बिन जियाद कहते हैं मेरे सामने दुनिया तमाम जीनतों से सज कर आई तो मैं ने कहा मैं तेरी बुराई से अल्लाह की पनाह चाहता हूं। दुनिया ने कहा अगर तुम मेरे शर (ख़तरात) से बचना चाहते हो तो रुपये पैसे से दुश्मनी रखो क्यों कि दौलत और रुपये पैसे हासिल करना दुनिया को हासिल करना है जो उन से अलग थलग रहे वह दुनिया से बच जाता है। (मुकाशफतुल क़ुलूब, बाब 38, पेज 251)

माल की महब्बत/दुनियादारी सब से बड़ा गुनाह हैः-

अल्लाह त'आला ने हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ वही की ऐ मूसा! दुनिया की महब्बत में मशगूल न होना, मेरी बारगाह में इस से बड़ा कोई गुनाह नहीं है। रिवायत है कि हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम एक रोते हुए शख़्स के पास से गुजरे, जब आप वापस हुए तो वह शख़्स वैसे ही रो रहा था, मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह त'आला से अर्ज़ किया या अल्लाह! तेरा बन्दा तेरे डर से रो रहा है, अल्लाह त'आला ने कहा, ऐ मूसा! अगर आँसू के रास्ते उस का दिमाग़ बाहर निकल आए और उसके उठे हुए हाथ टूट जायें तब भी मैं उसे नहीं माफ करूँगा, क्योंकि यह दुनिया से मुहब्बत रखता है। (मुकाशफतुल क़ुलूब, बाब 31)

बेच कर तलवारे, खरीद लिए मुसल्ले हमने।
ईमान लुटती रही और हम सजदे करते रहे।

जिहाद छोड़ने का दौर

हदीस : हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया जब लोग रुपये पैसे अल्लाह के राह में खर्च

करने में बुख्ल (कंजूसी) करेंगे, आपस में उमदह सामान की ख़रीद व फारोखत करेंगे और जेहाद को छोड़ देंगे तो अल्लाह तआला उन पर ऐसी जिल्लत मुसल्लत फरमाएगा जो उन से उस वक्त तक दूर नहीं होगा जब तक वो दीन की तरफ नहीं लौटेंगे (यानी जब तक दुनियादारी छोड़कर दीनदारी न अपना ले)। (अज़ाबे इलाही के असबाब, पेज 106)

जिहाद से ही कामयाबी है

अल्लाह फर्माता है : (तर्जमा) ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और उसकी तरफ़ वसीला ढूंडो और उसकी राह में जिहाद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह (कामयाबी) पाओ। (सूरह मईदा, आयत न. 36)

जिहाद 3 किस्म के

एक अल्लाह वाले (आरिफ बिल्लाह) का कौल है कि जिहाद की तीन किस्में हैं।

1. कुफ्फार के साथ जिहाद और यह जिहाद ज़ाहिरी है।

2. बातिल फिरकों के साथ इल्म और दलीलों से जिहाद।

3. नफ़्से अम्मारा से जिहाद । (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 5, पेज 58)

तवज्जो - ये दौर इब्तिदाई इस्लाम का दौर के जैसा कुफ़्फ़ार से जहरी जंग लड़ने का नही बल्कि इस दौर में जिहाद से मुराद बातिल फिरकों का रद्द करना है क्योंकि इससे हमारा ईमान को ज्यादा खतरा है मगर अफसोस की बातिल फिरकों से भी जिहाद के बजाय इत्तेहाद करने की साजिशें और कोशिशें की जा रही है। और नफ़्से अम्मारा से तो हर दौर में हर हाल में जिहाद करने का हुक्म है।

जिहाद न करना दुनियादारी के वजह से

ऐ ईमान वालों तुम्हें क्या हुआ जब तुम से कहा जाए कि खुदा की राह में कूच करो तो बोझ के मारे ज़मीन पर बैठ जाते हो क्या तुमने दुनिया की ज़िन्दगी आख़रित के बदले पसन्द कर ली और जीती दुनिया का असबाब आख़रित के सामने नहीं मगर थोड़ा (सूरह तौबा, आयत 38)

नमाज व रोज़ा ईमान का असल नहीं

अकीदा :- अस्ले ईमान सिर्फ तस्दीक़ का नाम है यानी जो कुछ अल्लाह व रसूल ﷺ ने फ़रमाया है उसको दिल से हक़ मानना । आ'माल (यानी नमाज़, रोज़ा वग़ैरह) ईमान का हिस्सा नहीं। (बहारे शरीयत, हिस्सा 1, ईमान व कुफ़्र

का बयान, पेज 47, हिन्दी)

ज़िस्मानी ज़ाहिरी अमल ईमान नहीं

अमले जवारेह यानी हाथ पैर वग़ैरह से किए जाने वाले अमल या काम (जैसे, नमाज़, रोजा, तिलावत, तस्बीह वगैरह) ईमान के अन्दर दाखिल नहीं है।(बहारे शरीयत, हिस्सा 1, ईमान व कुफ़्र का बयान, पेज 48, हिन्दी)

नमाज़ी होंगे मगर मोमिन नहीं

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रजिअल्लाहु तआला अन्हुमा) से रिवायत है कि नबी अकरम ने फ़रमाया कि लोगों पर एक ऐसा ज़माना भी आयेगा कि वो मस्जिदों में इकट्ठे होंगे और बा जमाअत नमाज़ पढ़ेंगे लेकिन उनमें मोमिन न होगा। (इब्ने अबी शैबा 6/163-हदीस 30355, (इमाम हाकिम-अल इमाम मुस्तदरक- 4/489-हदीस-8365)

नमाज़ रोज़े की ज्यादती से जन्नत में दाखला नही

फरमाने मुस्तफा ﷺ है, मेरी उम्मत के लोग जन्नत में नमाज़ व रोज़ों की ज्यादती से नहीं बल्कि ईमान यानी दिलों की सलामती, सखावत और मुसलमानों पर रहम करने की बदौलत दाखिल होगे। (मुकाशफूतुल कुलूब, बाब 18, पेज 130)

जिहाद न करना दुनियादारी के वजह से

अल्लाह फ़रमाता है (तर्जुमा) : ऐ ईमान वालों तुम्हें क्या हुआ जब तुम से कहा जाए कि खुदा की राह में कूच करो तो बोझ के मारे ज़मीन पर बैठ जाते हो क्या तुमने दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के बदले पसन्द कर ली और जीती दुनिया का असबाब आख़िरत के सामने नहीं मगर थोड़ा (सूरह तौबा, आयत 38)

जिहाद छोड़ने का अंज़ाम

हदीस : हमारे नबी ﷺ ने फ़रमाया (तर्जुमा) : जब मुसलमान जिहाद करना छोड़ देंगे तब अल्लाह तुम पर ऐसी ज़िल्लत डाल देगा कि उसे तब तक (तुम्हारे ऊपर से) न हटाएगा जब तक कि तुम अपने दीन की तरफ न पलट आओ (यानी दुनियादारी से तौबा करके परहेज़गारी न अपना लो)। (अबू दाऊद, हदीस नं 3462)

नादानी में गुनाह और तौबा

तुममें जो कोई नादानी से कुछ बुराई कर बैठे फिर उसके बाद तौबा करें और संवर जाए तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (सूरह- अनआम, आयत न 54)

तौबा करने वालों के साथ अल्लाह का मामला

कुरआन में अल्लाह का फ़रमान है : (तर्जुमा) मगर वो जिन्होंने तौबह की और संवरे और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थामी और अपना दीन ख़ालिस अल्लाह के लिये कर लिया तो ये मुसलमानों के साथ है और अन्करीब अल्लाह मुसलमानों को बड़ा सवाब देगा। (सूरह निसा, आयत नं. 146)

तौबा 4 बातों से मुकम्मल होती हैः

1. ज़बान- जबान को बेहूदा बातों, गीबत, चुगलखोरी और झूठ से रोक लो।

2. दिल - अपने दिल में हसद और ख़्वाहिशात न रखें।

3 दिमाग- आपने दिमाग और अपने आप को उन कामों से अलग रखें जिनका ज़िम्मा खुद अल्लाह ने लिया है जैसे-रिज़्क, ज़िन्दगी और मौत

4. जिस्म- अपने आप को बुरे लोगों से दूर रखें क्योंकि बुरे लोग बुराई की तरफ ले जाते हैं। बुरे जगहों से भी दूर रखो क्योंकि बुरे जगह मे हिफाज़त के फरिशते नही जाते। (गुनियतुत्तालिबीन)

दुआ 10 वजहों से कुबूल नहीं होती

हजरत शफीक बल्खि रदीअल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हजरत जुनैद बगदादी एक दफा बसरा के बाजारों में से गुजर रहे थे लोग आपके ईद गिर्द जमा हो गए। उन्होंने अर्ज की ऐ जुनैद बगदादी (रहमतुल्लाह अलैह) कहत साली (यानी आकाल) का जमाना है। पानी की बूंद बूंद को लोग तरस रहे हैं। कई दिनों से हम मुसलसल अल्लाह त'आला की बारगाह में दस्ते सुवाल दराज कर रहे हैं लेकिन हमारी दुआओं को शरफे कुबूल हासिल नहीं हो रहा हालांकि अल्लाह त'आला का इरशादे गिरामी है, तुम मुझसे दुआ मांगो मैं तुम्हारी दुआ कुबूल फरमाऊंगा, इसके बावजूद वोह हमारी दुआओं को कुबूल नहीं फरमा रहा, इसकी वजह क्या है? तो आपने इरशाद फरमाया ऐ अहले बसरा 10 बातों में तुम्हारे दिल मुर्दा हो चुके हैं तुम्हारी दुआएँ कैसे कुबूल हों।

1. तुम अल्लाह की तौहीद पर ईमान लाए हो लेकिन ईमान का हक अदा नहीं करते हो।
2. तुम कुरान पर ईमान लाए हो लेकिन उसके अहकाम पर अमल नहीं कर पाते हो।
3. तुम रसूलुल्लाह ﷺ की महब्बत का दावा करते हो लेकिन उनकी सुन्नत के मुताबिक अमल पैरा नहीं हो।
4. तुम शैतान की दुश्मनी की जबानी इजहार करते हो लेकिन आमाल में उसकी इताअत और मुवाफिकत करते हो।
5. तुमने जन्नत में दाख़िल होने का दावा किया है लेकिन उसके लिए अमल नहीं करते हो।
6. तुम दोजख़ की आग से बचने की दुआएं तो करते हो लेकिन अपने आपको उसमें फेंक रहे हो।
7. तुम जबान से येह कहते हो की मौत का आना हक़ है और अटल हक़ीक़त है लेकिन उसके लिए तैयारी नहीं करते हो।
8. तुम अपने भाइयों की ऐब जोई में मशगूल रहते हो और अपने गिरेबान में झांक कर नहीं देखते हो।
9. तुम अपने परवरदिगार की नेयमतें खाते हो और उसका शुक्र अदा नहीं करते हो।
10. तुम अपने मुर्दों को दफन करते हो लेकिन उनसे इबरत हासिल नहीं करते। (हवाला जियाउल वाईजीन, पेज 493)

6 किस्म के अमल से जन्नत

हदीस : इमाम अहमद व बैहकी ने उबादा इब्ने सामित रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरे लिए छः चीज़ों के ज़ामिन हो जाओ मैं तुम्हारे लिए जन्नत का ज़ामिन (गारंटर) होता हूँ :-

1. जब बात करो सच बोलो।
2. जब वादा करो उसे पूरा करो।
3. जब तुम्हारे पास अमानत रखी जाये उसे अदा करो।
4. अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करो।
5. अपनी निगाहें नीची रखो।
6. अपने हाथों को रोको यानी हाथ से किसी को ईज़ा न पहुँचाओ।

7 वसियतें

हदीस :- हजरत अबू ज़र गफ्फारी रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि मैनें कहा कि या रसूलल्लाह ﷺ आप मुझको कोई वसीयत फ्रमायें तो आप ने फरमाया कि मैं तुम तक़वा की वसीयत करता हूँ क्योंकि यह तुम्हारे कामों को बहुत ज़्यादा संवार देने वाली चीज़ है।

तो मैंने कहा कि कुछ और ज़्यादा वसीयतें फरमाईये तो आप ने फरमाया कि तुम कुरआन की तिलावत और ज़िक्रे इलाही को अपने लिए लाज़िम कर लो। क्योंकि इससे आसमान में तुम्हारा ज़िक्र होगा। और ज़मीन में यह तुम्हारे लिए नूर बनेगा।

मैंने कहा कि कुछ और ज़्यादा फरमाईये? तो फ़रमाया कि तुम तवील खामोशी को लाज़िम पकड़ो क्योंकि यह शैतान को बहुत ज़्यादा फटकारने वाली चीज़ है। और यह तुम्हारे दीनी कामों में तुम्हारे लिए मददगार होगी।

मैंने कहा कि कुछ और ज़्यादा फरमाईये? तो फरमाया कि बहुत ज़्यादा हँसने से बचो क्योंकि यह दिल को मुर्दा और चेहरे के नूर को गारत कर देता है।

मैंने कहा कि मुझे कुछ और ज़्यादा फरमाईये? तो फरमाया कि तुम हक बात बोल दिया करो अगरचे लोगों को कड़वी लगे।

मैंने कहा कि कुछ और ज़्यादा मुझे बताईये? तो आपने फरमाया कि तुम अल्लाह अज़्ज़वजल के मामले में किसी मलामत करने वाली की मलामत से न डरो।

मैंने कहा कि मुझे कुछ और ज़्यादा बताईये? तो आपने फरमाया कि तुम लोगों के ऐबों को बयान करने से ज़बान को रोके रखो। जिसके बारे में तुम जानते हो कि वह उयूब खुद तुम्हारी जात में मौजूद हैं। (मिश्कात, जिल्द 2, सफा 415)